B.A. III rd year (Sociology)

Paper I - Perspectives in Sociology

Topic - Max Weber (Social Action)

Reading material by —
Professor Sangeeta Pandey
email - sangeeta.pandey1989@gmail.com

Social Action concept and Types

मैक्स वेबर के अनुसार - 'समाजशास्त्र सामाजिक क्रियाओं का विज्ञान है।' वेबर के समाजशास्त्र में सामाजिक क्रिया का केन्द्रीय स्थान है। वेबर ने Theory of Social Organization 1964, में समाजशास्त्र को निम्न प्रकार से परिभाषित किया "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया के निर्वचनात्मक अवबोध का और इसके द्वारा उसकी प्रक्रिया और प्रभावों की कारणात्मक व्याख्या तक पहुँचने का प्रयास करता है।"

Sociology is a science which attempts the interpretative understanding of social action in order thereby to arrive at a causal explanation of its course and effects (Max Weber, Theory of Social and Economic Organization, 1964. Page 88)

Scanned by CamScanner

सामाजिक क्रिया का अर्थ :—

वेबर के अनुसार प्रत्येक सामाजिक व्यवहार सामाजिक क्रिया नहीं कहलाता। वही सामाजिक व्यवहार सामाजिक क्रिया कहलाता है जिसके साथ क्रिया को करने वाला कर्ता कोई व्यक्तिनिष्ठ अर्थ या उद्देश्य जोड़ता है।

सामाजिक क्रिया = सामाजिक व्यवहार + अर्थ (व्यक्तिनिष्ठ)

अर्थात् क्रिया अर्थपूर्ण व्यवहार की श्रेणी में आनी चाहिए।

कर्ता व्यक्तिनिष्ठ अर्थ के साथ-साथ, क्रिया को सम्पादित करने में अन्य सामाजिक व्यक्तियों के व्यवहार के को ध्यान में रखता है या दूसरे (सामाजिक व्यक्ति) के प्रति व्यवहार के प्रति अनुकूलित भी होता है।

इस प्रकार 'व्यक्तिनिष्ठ अर्थपूर्णता' तथा 'अन्य सामाजिक व्यक्तियों (alters) के व्यवहार के प्रति अनुकूलता' इन दोनों विशेषताओं के बिना कोई व्यवहार सामाजिक क्रिया की श्रेणी में नहीं आता।

वेबर के शब्दों में :—

"क्रिया वहीं तक सामाजिक होती है, जहाँ तक, क्रिया करते व्यक्ति (या व्यक्तियों) द्वारा इसके साथ जोड़े गये व्यक्तिनिष्ठ अर्थ के आधार पर, यह दूसरों के व्यवहार को ध्यान में रखती है तथा अपनी सम्पादन अवधि में (दूसरे के व्यवहार) के प्रति अनुकूलित होती है"।

इसे और स्पष्ट करते हुये वेबर ने लिखा —

"सामाजिक क्रिया कहलाने के लिए कर्ता की क्रिया दूसरों के विगत, वर्तमान या भावी (past, present, future) किसी भी समय के व्यवहार के प्रति अनुकूलित हो सकती है...।"

(Max Weber, The Theory of social and Economic Organization, 1964 page 112)

वेबर के अनुसार - "non meaningful behaviour ie reactive behaviour to which no subjective meaning is attached is outside the purview of sociology..."

सामाजिक क्रिया की विशेषताएं :

1. सामाजिक क्रिया एक बाह्य क्रिया होती है। लेकिन प्रत्येक बाह्य क्रिया सामाजिक क्रिया नहीं होती
2. वही क्रिया 'सामाजिक' होती है जिसको करने वाला कर्ता कोई न कोई सब्जेक्टिव अर्थ लगा कर सम्पादित करता है।
3. सामाजिक क्रिया अन्य व्यक्तियों के भूत, वर्तमान और भविष्य के व्यवहारों के प्रति अनुकूलित होती है।
4. प्रत्येक सम्पर्क 'सामाजिक क्रिया' का आधार नहीं होता। सम्पर्क सामाजिक होना चाहिये। वेबर एक उदाहरण द्वारा इसे स्पष्ट करते हैं - जैसे दो साइकिल सवार एक दूसरे से टकरा जाते हैं और बिना कोई प्रतिक्रिया दिये अपनी, अपनी साइकिल लेकर पूर्ववत अपने अपने मार्गों पर चले जाते हैं तो यहाँ सम्पर्क हुआ पर यह सम्पर्क भौतिक के समान है क्योंकि यहां कोई मानसिक सम्पर्क और संचार नहीं है। लेकिन यदि वे साइकिल सवार टकराने के बाद एक दूसरे को उसकी गलती बताएं या लड़ने ही लगें तो तुरन्त यह क्रिया सामाजिक क्रिया की श्रेणी में आजायेगी। क्योंकि ऐसे में वे साइकिल सवार एक, दूसरे की क्रिया के प्रतिजागरुता स्पष्ट करते हैं। पारस्परिकता, 'पारस्परिक जागरूकता' अनिवार्य है।
5. यदि क्रिया किसी भौतिक वस्तु के प्रति अनुकूलित है तो भी क्रिया सामाजिक नहीं कही जायेगी। क्रिया अवश्य सामाजिक व्यक्ति के प्रति अनुकूलित होनी चाहिये। जैसे यदि कोई व्यक्ति किसी मूर्ति (निर्जीव वस्तु) (के प्रति अनुकूलित है) के सम्मुख बैठ कर पूजा कर रहा है तो यह सामाजिक क्रिया

Scanned by CamScanner

नहीं है लेकिन यही पूजा यदि वह किसी पंडित या पुजारी के निर्देशन में सम्पादित कर रहा है तो यह क्रिया सामाजिक क्रिया की परिधि में आ जायेगी।

6. प्रत्येक प्रकार का अनुकरण, सामाजिक क्रिया नहीं होता। अनुकरण अर्थपूर्ण होना चाहिए।

7. अनेक व्यक्तियों द्वारा सम्पादित 'समान क्रियायें' मात्र अपनी समानता के कारण 'सामाजिक क्रिया' की श्रेणी में नहीं आती। यदि वर्षा के कारण कई लोग, बचाव के लिए छाते का प्रयोग करने लगते हैं तो यह व्यवहार भी 'सामाजिक क्रिया नहीं है। क्योंकि छाते का प्रयोग लोगो द्वारा वर्षा से बचने के लिए किया जा रहा है, एक दूसरे के प्रभाव में आकर नहीं।

सामाजिक क्रिया के प्रकार

वेबर ने चार आदर्शप्रारूप (सामाजिक क्रिया के) स्पष्ट किये हैं:—

(1) Zweckrational action ~~मूल्यानुकूलित~~
विवेकसंगत, लक्ष्यानुकूलित क्रिया

(2) Wertrational action
(विवेकसंगत, मूल्यानुकूलित क्रिया)

(3) Affective action
भावनात्मक क्रिया

(4) Traditional action
परम्परागत क्रिया

1) Zweckrational action — यह तार्किक क्रिया है, कर्ता क्रिया का लक्ष्य पूर्ण तार्किक आधार पर निर्धारित करता है। साधनों को भी लक्ष्यपूर्ति में अधिकतम सहायता या क्षमता (efficiency) के ही आधार पर चयनित किया जाता है।

Scanned by CamScanner

(2) विवेकसंगत, मूल्यानुकूलित क्रिया (Wert rational action)— इस क्रिया में कर्ता साधन को तार्किक आधार पर, उसकी efficiency के आधार पर चयनित करता है। लेकिन लक्ष्य का निर्धारण किसी मूल्य के आधार पर होता है, जैसे एक डूबते हुये जहाज के कप्तान का सबको बचाते हुये, अन्ततः डूब (जहाज के साथ) जाने का निर्णय।

(3) भावात्मक क्रिया (Affective or emotional Action)— इस क्रिया का लक्ष्य एवं साधन दोनों ही किसी संवेग या भावना के आधार पर चयनित होता है। जैसे माता द्वारा बच्चे को किसी गलत कार्य के लिए चाँटा लगा देना।

(4) परम्परागत क्रिया, Traditional Action— इस क्रिया में लक्ष्य तथा साधन दोनों ही किसी प्रथा या परम्परा द्वारा निर्धारित या चयनित किए जाते हैं। समाज में किये जाने वाले संस्कार, कर्मकाण्ड, उत्सव आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

विभिन्न आदर्शप्रारूपीय क्रियाओं का स्पष्टीकरण :—

	क्रिया का प्रकार	साधन चयन का आधार	लक्ष्य निर्धारण का आधार
1.	Zweckrational action (विवेकसंगत, लक्ष्यानुकूलित क्रिया)	तार्किक आधार पर efficiency based	तार्किक आधार पर rational basis
2.	Wert rational action विवेकसंगत मूल्यानुकूलित क्रिया	efficiency based	on the basis of a Value
3.	Affective Action भावनात्मक क्रिया	Based on emotions	emotions
4.	Traditional Action परम्परागत क्रिया	Based on customs	customs, Traditions

Scanned by CamScanner